

सं. ग्रो.वि./ग्रम्बाला/99-85/35004.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल ने राय है कि मे. आफिनर द्वारा, सेन्ट्रल सोयल एण्ड वाटर कन्जरवेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इन्सटीच्यूट, रिसर्च सेन्टर, सेन्टर-१, चण्डीगढ़ (2) सीनियर और तीक्ष्णकाल प्रैसिसटेट सेन्टर सोयल एण्ड वाटर कन्जरवेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इन्सटीच्यूट, रिसर्च फार्म मस्हा देवी, पो. श्री. मनीष उरा, जिला अमृतसर के श्रमिक श्री करतार सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इनके बाद लिखित घासले में कोई श्रीधीरिक प्राप्त है;

और चंकि हरियाणा के राज्याग्रल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट नहरता बोछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, प्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की (1)-धारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी व प्रेसुतां सं. 3 (41) 84-3-भन, दिनांक 18 अप्रैल, 1934 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अंतर्गत यहि धा. विवादित घटना को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित तीव्रे लिङ्ग मामला अधिनियम एवं पंचाट्ठोत्तम समें देने का लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो फि उक्त पञ्चवक्त्रों तथा प्रभिका के बीच पा सो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से संबंधित अवृत्त सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री करतार सिंह की सेवाओं का समाधन न्यायोचित तथा शीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है?

सं. श्रो.वि./अम्बाला/106-85/35011.—चूकि हरियाणा के राज्यसभा की राय है कि मैं 1. आर्थिक इत्वार्ज, सेन्ट्रल सोयल एन्ड वाटर कंजरवेशन रिसर्च एन्ड ट्रेनिंग इन्सटीट्यूट, रिजर्व नैटर, सैन्ट्रल-27, चण्डीगढ़, 2 सीनियर टेक्नीक न असिस्टेंट, सेन्ट्रल सोयल एन्ड वाटर कंजरवेशन रिसर्च एन्ड ट्रेनिंग इन्सटीट्यूट रिसर्च फार्म भन्सा देवी, पो. श्री. मनिसाजरा, जिला अम्बाला, के श्रमिक श्री दया राम तथा उसके प्रबन्धकों के बीच हस्तमूलक विवाद है;

और चंकि हरियाणा के राज्याल बिवाद को न्यायनिर्धय हेतु निश्चिह्न करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (i) के खण्ड (g) द्वारा प्रदान की गई भक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इनके द्वारा सरकारी अधिकृतवास सं. 3 (44) 84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय; आम्बाला को विवादप्रस्त या उससे शम्बुद्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में बेने के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबंधकों तथा असिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से युस्पेत अथवा सम्बुद्धित मामला है :—

क्या श्री दया राम की सेवाओं का समाधान 'न्यायांचित्' तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कदार है?

सं. श्रो.वि./अम्बाला/126-85/35018.—बूकी हरिकमा के राजदण्ड की राय है कि मे. 1. आफिसर इन्चार्ज, सेन्ट्रल सोयल एन्ड वाटर कंजरवेशन रिसर्च एंड टेनिग इन्स्टीट्यूट, रिसर्च सेन्टर, सेवटर-27, चंपाईड़, 2. सीनियर टैक्सीकल असिस्टेंट, यैटल सोयल एन्ड वाटर कंजरवेशन रिसर्च एंड टेनिग इन्स्टीट्यूट, रिसर्च फार्म भन्ता देवी, पौ. आ. भनिभावा, जिना अम्बाला, के अधिक श्री सच्च लाल तथा उसके प्रबल्कों के बीच ईसी इसके बाद लिखें मापत्रे में कोई भ्रोडोगिक विवाद है :

प्रो. चंकिं इतिहास के राज्यपत्र विद्वान् को स्थायनिशंख तेज निर्विघ्न करना बांहनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, भौतिकीयक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के दण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरगरी प्रधिसूचना सं. 3(44)84-3-प्रप, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम व्यावस्था, प्रम्बाल की विवादप्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला व्यायनिय एवं पंचाट तीन मास में देंह के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा धर्मिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से संसर्ग अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री सुख लाल की सेवाओं का समापन त्यापोचित तथा छोड़ा है? परिणहों तो वह किस राहत का हुक्मदार है।

सं.प्रो.वि./श्रम्भाला/104-85/35025.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मि. 1. ग्रेहिपर इन्चार्ज, सैन्ट्रल सोयल एम्ड वाटर कंजरेशन रिसर्च एन्ड ट्रेनिंग इण्सटीच्यूट, रिसर्च सैन्टर, सैक्टर-27, चंडीगढ़, 2. सीमितर टैक्सीकल असिस्टेंट, सैन्ट्रल सोयल एम्ड वाटर कंजरेशन रिसर्च एन्ड ट्रेनिंग इण्सटीच्यूट, रिसर्च फाँ, मन्सा देवी, पी. पा. मनिमाला, जिला श्रम्भाला, के श्रमिक श्री बलबीर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में बोई औद्योगिक विवाद है;

और चंकि हरियाणा के राज्याल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करता वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, श्रीवैद्यगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 के धारणा (1) के धारणा (g) द्वारा प्रश्न की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा वे राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकृता सं. 3(1) 84-3-भम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम व्यायालय, अमृता को विवाद्यस्त या उक्ते सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट सीन, मास-में देने के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रान्तकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद्यस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री बलबीर की सेवायों का समाप्त न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो कहुँ किसे राहत में हकदार है?